सोहर

कहँवा से आवेला पियरिया, पियरिया बड़ा सुन्नर हो।
ललना, कहँवा से आवेला सिन्होरवा, सिन्होरवा भरल सेनूर हो ।।1।।
कहँवाहिं धरबो पियरिया, पियरिया बड़ा सुन्नर हो।
ललना, कहँवाहिं धरबो सिन्होरवा, सिन्होरवा भरल सेनूर हो ।।2।।
बकसा में धरबो रे पियरिया, पियरिया लरी लागल हो।
ललना, कोठिला पर धरबो सिन्होरवा, सिन्होरवा भरल सेनूर हो ।।3।।
मचिया बइठल रउरा अम्माँ, हमर सिर साहेब ए।
अम्माँ, भउजी के अइले पियरिया, पियरिया हम बधइया लेबो हो ।।4।।
चउका पइसल रउरा दुलहिन, त तुहूँ मोरा दुलरइतिन हो।
दुलहिन, देइ घालऽ ननद के पियरिया, दुलारी धिया पाहुन हो ।।5।।
बोले के तऽ ए सासु बोललू, बोलहिं नाहिं जानेलू ए।
सासु, नाहिं देबो नइहर के पियरिया, दुलारी धियवा पाहुन ए ।।6।।
सभवा बइठल रउरा बाबा, भउजी के अइले पियरिया नू हो।
बाबा, हमहुँ पियरिया लेब बधइया, पियरिया बड़ा सुन्नर हो ।।7।।
चउका पइसल रउरा दुलहिन, त मोरा दुलरइतिन हो।
दुलहिन, देइ घालऽ नइहर के पियरिया, दुलारी धियवा पाहुन हो ।।8।।

बोले कं त ए ससुर बोलीले, बोलहिं ना जानीले ए।
ससुर, नाहिं देबो नइहर के पियरिया, दुलारी धियवा पाहुन हो ।।9।।
जुअवा खेलत रउरा भइया, हमरे सिर साहेब ए।
भइया, भउजी के अइले पियरिया, पियरिया बड़ा सुन्नर ए ।।10।।
चउका पइसला रउरा धनिया, त मोरी दुलरइतिन ए।
धनिया, देइ घालऽ डाँड़ के चुनरिया, बहिनिया मोरा पाहुन ए ।।11।।
बोले के तऽ ए परभु बोलीले, बोलहिं नाहिं जानीले ए।
परभु, महल बलकवा हम तेजब, बने बने सेवब ए।
परभु, नाहिं देबो डाँड़ के चुनरिया, नउजी बहिनी पाहुन ए।।12।।
काँच करचिया हम कटायब, बधनी पीठ फोरब ए।
ललना, करबो में दोसर बिआह, पियरिया हम बधइया देबो ए ।।13।।
डाँड़ में से खोलेलो पियरिया, त फेंके गजओबर ए।
ननदी, लेइ घालऽ नइहर के पियरिया, पियरिया मोरा सवतिन ए ।।14।।

अभ्यास

1. एह गीत के आधार पर बताईं कि संतान के जन्म के बाद नइहर से कवन-कवन चीज आवेला।
2. 'पाहुन' केकरा कहल गइल बा ?
3. एह तरह के कवनो दोसर गीत पता करीं।
4. बहिन कवना चीज के माँग करत बाड़ी ?

शब्द-भंडार

पियरिया	–	पियर साड़ी
धरबो	–	रखबो
सुन्नर	–	सुन्दर
सिन्होरवा	–	सिन्दुर रखे के पात्र
सेनूर	–	सिन्दुर
लरी	–	झालर
कोठिला	–	अनाज राखे खातिर मिट्टी के बनल बखा
साहेब	–	श्रेष्ठ
चउका	–	रसोई घर
पइसल	–	घुसल, बइठल
देइ घालऽ	–	दे डाल, दे द
पाहुन	–	मेहमान
धनिया	–	सौभाग्यशाली पत्नी
डाँड़	–	कमर
नउजी	–	नहीं
काँच	–	कच्चा
करचिया	–	बाँस के पातर टहनी।

सोहर

सभवाहिं बइठल कवन बाबू, सोनरा सोनरा करे हो।
मोरा बहिना के हथवा गोनार, कँगन भला सोभेला हो।
मोरा बहिना के टूसा अइसन नाक, झुलनिया भला सोभेला हो ।।1।।
मचियाहिं बइठली कवन देइ, अझकी झझकी बोले हो, गरजी
तरजी बोले हो।
भोरा इहो रे ससुर जी के धियवा, सरब धन लूटेली हो ।।2।।
बाहर लूटेली अनधन, भीतर भँड़सर हो।
मोर नीमन साहेब बिगड़वली, सरब धन लूटेली हो ।।3।।
सभवाहिं बइठल कवन बाबू, दरजी दरजी करे हो।
मोरा बहिना के पतरी कमरिया, लहँग भला सोभेला हो ।।4।।
सभवाहिं बइठल कवन बाबू, रँगरेजवा रँगरेज करे हो।
मोरा बहिना के पतरी कमरिया, चुनरिया भला सोभेला हो ।।5।।

शब्द-भंडार

गोनार	–	एक प्रकार के घास के चटाई
टूसा	–	टहनी भा लता के फुनगी के आगे के भाग
अइसन	–	ओकरे संमान
झझकी	–	झुँझला के, झझक के
इहो	–	यह
धियवा	–	बेटी
भँड़सर	–	अन्नागार
नीमन	–	बढ़िया, अच्छा
बिगड़वली	–	बिगाड़ दिहल
लहँग	–	लहँगा

अभ्यास

1. एह गीत में कवन-कवन गहना के वर्णन आइल बा आ उ कवन अंग में पहिरल जाला, लिखीं।
2. 'ससुर जी के धियवा' के मतलब का भइल, लिखीं।
3. संतानोत्पत्ति के खुशी में गावल जाए वाला ई गीत के का कहल जाला? पता करीं।

सोहर

छोटी मुटी बनवा सिहुलिया के, बनवा सोहावन हो।
ललना, ताहि बीचे सीता बनवासल, भुइयाँ लोटी रोवेली हो ।।1।।
बन में से निकले बनसपती, त सीता समुझावेली हो।
ए सीता, कवन संकट तोरा पड़ले त भुइयाँ लोटी रोवेलू हो ।।2।।
के मोरा आगे पीछे बइठी, त के होइ धगरिन हो।
वनसपती, के दीहें सोने के हँसुअवा, केइए नार काटे नू हो ।।3।।
हम तोरा आगे-पीछे बइठबि, हम होइबो धगरिन हो।
मोरें सीता, हम देबो सोने के हँसुअवा, त हमहिं नार छिलबि हो ।।4।।
घड़ी राति गइले पहर राति, होरिला जनम लेले हो।
ए ललना, बाजे लागल आनन्द बधावा, महल उठे सोहर हो ।।5।।
हँकरहुँ बन में नउआ, बेगहिं चलि आवहु हो।
ए नउआ, सीता के भइले ललनवा, लोचन पहुँचावहु हो ।।6।।
पहिला लोचन राजा दशरथ, दुसरे कोसिला रानी हो।
आरे, तीसरे लोचन बाबू लछुमन, राम जनि सूनसु हो ।।7।।
चारहिं खंड के पोखरवा, त राम दतुअन करे हो।
आरे, ओहि बाटे चलल‌न नउआ, त राम हँसि पूछेले हो ।।8।।

राष्ट्रीय गीत

भइया रंगरेजवा तू रंग द चुनरिया ।।टेक।।
पहिले छापऽऽ भारत माता, जे सभ के महतरिया ।
दूजे छापऽ हिमालय, तिसरे गंगा के लहरिया ।।टेक।।
चौथे छापऽ आजादी के, बरखत बा चिनगरिया ।
राणा जी के भाला छपिह, चेतक के असवरिया ।।टेक।।
भगत सिंह आजाद, राजगुरू, असली क्रांतिकरिया ।
वीर शिवाजी, कुंवर सिंह के, चमकत तलवरिया ।।टेक।।
अंचरा प लिख द नेता जी के जयहिन्द ललकरिया ।
बापूजी के सत्य अहिंसा, लिख दिह किनरिया ।।टेक।।

अभ्यास

1. ई गीत कवना समय काहे खातिर गावल जात रहे?
2. रंगरेज से कइसन चुनरी रंगे के निवेदन कइल जाता?
3. आजादी के चिनगारी का रूप में चौथा छाप के वर्णन करीं।
4. सारी के अंचरा आ किनारी पर का लिखे के कहऽ ता?

शब्द-भंडार

महतरिया	–	माई
बरखत चिनगारी	–	बरसत चिनगारी
असवरिया	–	सवारी
अंचरा	–	सारी के अगिला भाग
सत्य	–	सच्चाई
अहिंसा	–	केहु के कवनो जीव के मारल भा कलपावल हिंसा ह, आ एह भाव के अभाव अहिंसा कहल जाला।

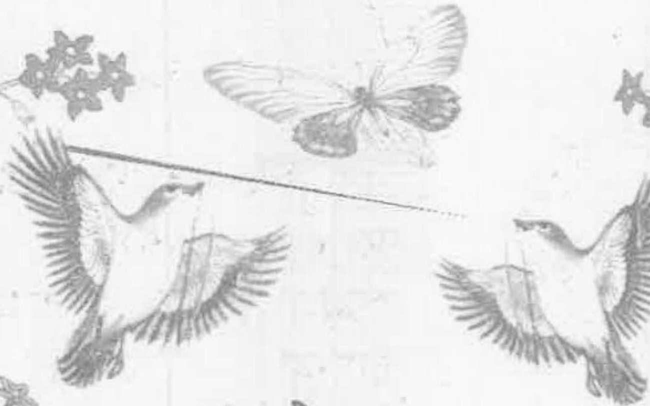

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

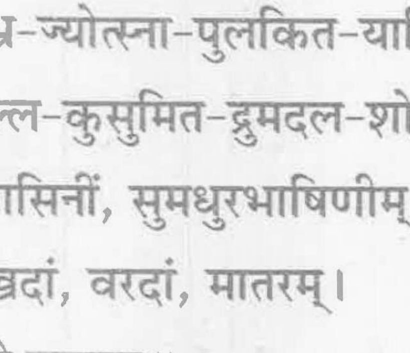

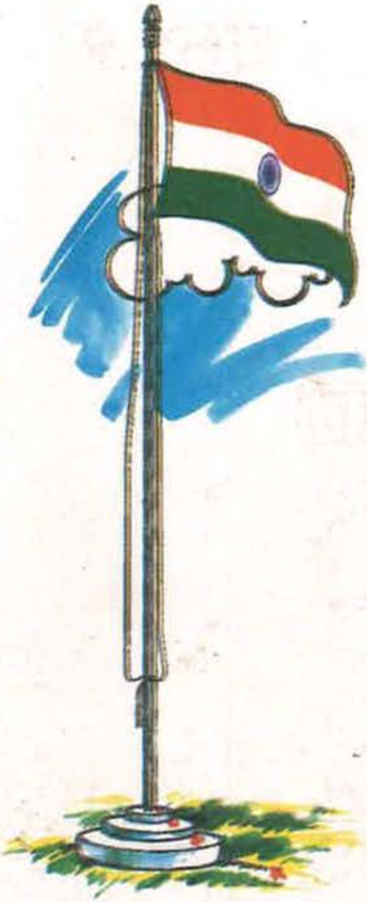

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग,
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना–1
BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

आवरण मुद्रण : जे० एम० डी० प्रेस, पटना–6